



मंथन से मिलता है अमृत

जो लोग कठिनाइयों से घबराकर जीवन को ही दोष देने लगते हैं, वे अपने जीवन के सागर का मंथन नहीं करते। उन्हे समझना होगा सागर-मंथन में विष के बाद अमृत ही निकलता है। प्रख्यात दार्शनिक ओशो का चिंतन....



अगर शास्त्र संस्कार को विष जैसा कहते हैं, तो चलो मान लेते हैं या गलत, यह कैसे जानेंगे? शास्त्र में लिखा है, सिर्फ इतने से वह सही थोड़े ही हो जाएगा। लिखे शब्दों के दीवाने मत बनो। एक सज्जन एक बार मेरे पास आए। वह कहने लगे— जो आपने कहा, वह शास्त्र में नहीं लिखा है, तो वह सही कैसे हो सकता है? तो मैंने कहा— चलो, मैं लिखकर दे देता हूँ। कहो तो छपवा कर दे दूँ। हस्तलिखित पर भरोसा हो तो लिखकर दूँ।

आखिर शास्त्र कैसे बनता है? किसी के लिखने से बनता है। किसी ने तीन हजार साल पहले लिखा दिया, क्या सिर्फ इसलिए उसकी बात सही है? मैं आज लिख रहा हूँ, इसलिए गलत हो जाएगा? तीन हजार साल पहले लिखे होने से कोई थीज़ सही तो नहीं हो जाएगी।

चुनाव आया। मुल्ता नसरुल्हीन बड़ा नाराज़ हुआ, ब्योकिं उसकी पत्नी का नाम बोटरलिस्ट में नहीं था। पत्नी को लेकर चुनाव अफसर के पास पहुँचा। उसने कहा कि मेरी पत्नी जिदा है, लेकिन बोटरलिस्ट में लिखा है कि मर गई। अफसर ने बोटरलिस्ट देखी और कहा, इसमें तो यही लिखा है कि मर गई। पत्नी बोली कि जब लिखा है, तब तो तीक ही लिखा होगा।

कुछ लोग लिखे हुए पर दीवाने की तरह

भरोसा करते हैं। शास्त्र में लिखा है, इससे सिर्फ इतना पता चलता है कि जिसने शास्त्र का लिखा होगा, उसने उस समय जीवन का कुछ इस तरह अनुभव किया था। तुम भी अपने जीवन के अनुभव से ही जांच पाओगे कि उसने सही लिखा है कि गलत लिखा है। कसीं तो सदा जीवन है, वही जाना पड़ेगा। आखिरी परीक्षा तो वही होगी।

इसलिए मैं कहता हूँ— भागो मत, शास्त्र की बात सुनकर मत भग जाना, नहीं तो तुम्हारा शास्त्र कभी पैदा न होगा। अपना शास्त्र खुद पैदा करो। अपने अनुभव को पैदा करो, अकेली तुम्हारा शास्त्र ही तुम्हारी मुक्ति बन सकती है।

ज्ञान याने के लिए जलना पड़ता है, हजार दोकरें खानी पड़ती हैं। ज्ञान इतना आसान नहीं है कि दूसरे के अनुभव से काम चला लिया जाए। तो जाओ। जीवन में। भागो मत। जग री कोई कठिनाई आई, तो तुम कहोगे— देखो, शास्त्र में लिखा है कि जीवन विष की तरह है। इतनी जल्दाजी मत करना। जीवन में गहरे जाओ। जीवन के सब रंग परखो। जीवन बड़ा सतरंग है। उसकी सब आवाज़े सुनो। सब कोणों से जांचो— परखो, सब तरफ से खहचानो। जब तुम जीवन को पूरा देखो लो, तब तुम भी जानोगे कि हाँ, जीवन विषवत है। लेकिन इस बात को स्वयं जानो से तुम्हारा रूपांतरण हो जाएगा। शास्त्र में पहकर तुमने जान तो लिया कि जीवन

विषवत है, लेकिन इससे हुआ क्या? तुम लिया, पढ़ लिया, बाद कर लिया, दोहराने लगे। हुआ क्या? क्या छूटा? क्या बदला? क्रोध वही का वही है। काम वही का वही है। लोभ वही का वही है। धन पर पकड़ वही की वही है। सब वही के वही हैं। और तुम वैसे के वैसे खड़े हो— बिना रूपांतरण के। नहीं, इतनी जल्दी मत करो। एक और बात भी है। शास्त्रों में वह भी लिखा है कि जीवन अमृत है। वे कहते हैं कि तुम अमृत के पुत्र हो। शास्त्रों में वह भी लिखा है कि जीवन प्रभु है, परमात्मा है।

जरूर जीवन में थोड़ा भेद है। एक जीवन है, जो तुमने अपने की तरह देखा, वह विषवत है। और एक जीवन वह है जो तुम आपौ खालकर देखोगे, वह अमृत है। एक जीवन है जो तुमने माया, मोह, मद, मस्तर के पर्दे से देखा। एक जीवन है जो तुम ध्यान और समाधि से देखोगे। जीवन तो वही है। एक जीवन है जो तुमने एक विकृति का चश्मा लगाकर देखा। जीवन तो वही है। चश्मा डातारकर देखोगे तो अमृत को पाऊगे। इसी जीवन में परमात्मा को हुपे भी तो लोगों ने देखा। यहाँ पर्दे परे में वही है, ऐसा कहने वाले बचन भी तो शास्त्र में है। यहाँ क्रृष्ण का मैं वही हूँ। पत्थर—पहाड़ उससे भरे हैं, कोई स्थान उससे स्थानी नहीं है। वही पास है, वही दूर है। वह भी तो शास्त्र में लिखा है।

मज़ की बात यह है कि तुम शास्त्र में से

भी वही चुन लेते हो, जो तुम चुनना चाहते हो। तुम अपनी सुविधा से चुनते हो। तुम शास्त्रों से भी वही कहलवा लेते हो, जो तुम कहना चाहते हो। अभी तुमने पूरा जीवन कहा देखा। अभी कंडड-पत्थर बीने हैं। जैसे कोई आदमी कुआँ खोदता है तो पहले कंडड-पत्थर हाथ लगते हैं। कूड़ा—कबड़ हाथ लगता है। कबड़ हाथ लगता है। फिर खोदता चला जाए तो धोरे—धीरे अच्छी मिट्टी हाथ लगती है, फिर खोदता चला जाए तो गोली मिट्टी हाथ लगती है। फिर खोदता चला जाए तो जल हाथ लगता है। गंदा जल हाथ लगता है। फिर खोदता चला जाए, तो स्वच्छ जल हाथ आ जाता है। ऐसा ही जीवन है। खोजो।

तुम जीवन को विष की तरह ही कहोगे, क्योंकि अभी तुमने ऊपर—ऊपर खोदा है। तुमने कूड़ा—कबड़ तो मिलेगा ही। जय गहरे जाओ। तुमने पूर्णों में सागर-मंथन की कहनी पढ़ी होगी। पहले विष निकला, फिर अमृत निकला। तुम पढ़ते भी हो, लेकिन आपे बंद कर के। जहाँ से विष निकला, वही से अमृत निकला। पहले विष निकला, फिर अमृत निकला। अंततः तो अमृत का घट ही निकला।

खोजते जाओ। जीवन तो एक सागर-मंथन है। विष याकर ही बढ़ बैठ जाना। नहीं तो जीवन की तुमने अधीरी और बूढ़ी तस्वीर ले ली। अगर तुमको जीवन में विष ही मिला, तो फिर परमात्मा को कहा

खोजोगे? जीवन के अतिरिक्त और तो कोई स्थान नहीं है। कहा जाओगे? गहरे खोदो। खोदते जाओ। जब तक अमृत का घट न निकल आए, तब तक खोदते जाना।

अभी तुम उस जीवन को जानते हो, जहा विष ही विष है। लेकिन उसका कारण जीवन नहीं, उसका कारण तुम्हारी गलत दशा है। सही चेतना से जीवन में खोजो। थोड़ा गहरे खोजो। तुम अपनी पत्नी में ही विष पाऊगे और अपनी पत्नी में ही परमात्मा भी, अमृत भी। तुम अपने ही भीतर विष भी पाऊगे और अपने ही भीतर अमृत भी। विष ऊपरी पर्दे है। सायद, वह अमृत की सुरक्षा के लिए है। अमृत भीतर छिपा है। अमृत को सुरक्षा चाहिए। विष सुरक्षा करता है। तुमने देखा होगा, गुलाब की ज़ाड़ी पर एक फूल होता है और कितने सारे कटे होते हैं। कटे रक्षा करते हैं गुलाब की। कटे और फूल, दोनों का एक ही सोत है। कटे हैं। कटे हैं जल्द, मगर जहाँ कटे हैं, वही गुलाब के फूल भी है। और कटे के क्षेत्र में वही गुलाब के फूल होते हैं।

विष है जीवन में बहुत, पर वह हमारे अमृत का रक्षक है। जिस दिन तम्हारे सोचे की यह दिशा होगी, उसी दिन तुम आस्तिक हो जाओगे। जिस दिन विष रक्षक मालूम हुआ और कटे फूल के मिश्र और सर्गी—साथी मालूम हुए, उसी दिन तुम आस्तिक हो जाओगे।

विष है जीवन में बहुत, पर वह हमारे अमृत का रक्षक है। जिस दिन तम्हारे सोचे की यह दिशा होगी, उसी दिन तुम आस्तिक हो जाओगे? गहरे खोदो। खोदते जाओ। जब तक अमृत का घट न निकल आए, तब तक खोदते जाना।